

सम्पादक की कलम से

सत्यशोधक से वास्तविक शिक्षा



जीवन में शिक्षा एक ऐसी कुँजी है— जिससे सभी ताले खुलते हैं। यह कहावत वास्तव में चरितार्थ होती है। याने जिन लोगों को शिक्षा मिली है, वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बुलन्दियों पर पहुँचने में सफल हुए हैं।

शिक्षा एक ऐसी व्यवस्था जिसके लिये शासक को पहल करना होती है। अपने आप शिक्षा नहीं मिल सकती। अपने आप कोई भी कैसे शिक्षित हो सकता है। प्रत्येक अभिभावक अपनी सन्तानों को शिक्षित ही नहीं सुशिक्षित उच्चशिक्षित कराना चाहते हैं। अशिक्षित स्वेच्छा से कौन रहना चाहता है। यह सब शिक्षा का दायित्व शासन-प्रशासन की नीतियों से ही संभव है। शासक चाहे तो प्रत्येक नागरिक को सुशिक्षित कराने की व्यवस्था कर सकता है। बजट आवंटन कर सकता है। शिक्षण संस्थानों के लिये पाठ्यक्रम तय कर सकता है। शिक्षकों को एक निर्धारित माप दण्ड के अनुसार प्रशिक्षण देकर नियुक्ति कर सकता है। शिक्षकों के वेतन भत्ते सुविधा एक समान कर सकता है। शिक्षित करने का दायित्व निर्धारित कर सकता विद्यार्थियों को खेलकूद मनोरंजन, संस्कारों, एन.एस.एस. आदि से तैयार कर राष्ट्रभक्त नागरिक बना सकता है। देश के नागरिक शिक्षित कर भयमुक्त, अंधकारमुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त, राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का सुसभ्य नागरिक बना सकता है। और यह सब शासक की इच्छाशक्ति पर ही निर्भर करता है। विश्व के कुछ देशों में निशुल्क रोजगार मूलक अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था है, इसका उदाहरण जर्मन, आस्ट्रेलिया जहाँ है, जहाँ शासक शिक्षा निशुल्क ही प्रदान करता है।

हमारे देश में तो एक समय ऐसा बना रहा कि केवल एक ही वर्ण के नागरिक शिक्षित हो सकते थे अन्य वर्णों को तो उनकी व राज की सेवा के काम बाँट रखे थे, और इतना भ्रम, अंधविश्वास पैदा कर दिया था, कि इन्सान का यदि देश में जन्म होता है तो उसकी उत्पत्ति की मान्यता थी कि ब्राह्मण का जन्म सर (माथा) से हुआ। क्षत्रिय का जन्म भुजाओं से हुआ। वैश्य का जन्म पेट से हुआ। और शूद्र का जन्म पैर से हुआ। याने इतना मानसिक गुलाम इन्सानों को वेद शास्त्रों पुराणों की रचना कर कानूनी रूप प्रदान कर दिया था।

हमारे देश में मुगलों की गुलामी तक यही कानून मान्य थे। जब अंग्रेज देश में आये और राज-काज अपने हाथों में लिया तब उन्होंने अपने राज को सुचारु संचालन करने के लिये नौकर पेशा वर्ग को शिक्षित करने हेतु विद्यालय महाविद्यालय जगह-जगह खोल दिये आवागमन के साधन एवं सुविधा का जाल फैलाना प्रारम्भ कर दिया। पुराने मनुवादी कानूनों में ऐसे-ऐसे परिवर्तन कर दिये जिससे सभी नागरिकों को समान अवसर के द्वार खुलने लगे। फिर भी सतीप्रथा, भिक्षाकृति, गुलामी, बालविवाह, कर्मकाण्ड, अंधविश्वास, कुरीतियों आदि से अब तक नागरिक भ्रमजाल में फंसे हैं, उन्हें मुक्ति नहीं मिल सकी है।

इसी काल में सामाजिक शैक्षणिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतीराव फुले का जन्म हुआ। उनकी प्रखर बुद्धि ने वेद, पुराण, धर्मशास्त्रों, कुरान, बाइबल आदि का सूक्ष्म अध्ययन करके हजारों वर्षों की मनुवादी व्यवस्था को तोड़ दिया व भारत वर्ष में सभी वर्णों को शिक्षित होने का और पहली बार महिलाओं को भी शिक्षित होने का द्वार खोल दिया। यहाँ से याने वर्ष 1848 से भारत में फुले दम्पति ने शैक्षणिक क्रान्ति खड़ी कर मनुवाद की व्यवस्था को चौपट करने का अभियान प्रारम्भ कर दिया। देश 1947 में अंग्रेजी राज से आजाद हो गया। फुलों के चेले डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने देश का संविधान फुले की प्रेरणा व नीतियों के अनुरूप ऐसा बनाया जिससे देश का प्रत्येक नागरिक समान रूप से शिक्षण प्रशिक्षित होकर अपना अपने परिवार अपने राष्ट्र का गौरव बढ़ा सकता है।

अब सवाल सबको समान रूप से शिक्षित प्रशिक्षित होने का कानूनी अधिकार तो मिल गया। किन्तु इसका अमली रूप तो सरकार को ही देना था। आजाद भारत की सरकारों ने यहाँ फिर मनुवाद की जकड़ को बनाये रखने हेतु ऐसे शिक्षण, प्रशिक्षण, संस्थान ही नहीं बनाये और प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था की कोई ठोस नीति ही नहीं बनी। हमारे शासन प्रशासन ने तो ऐसी शिक्षा नीतियां बनाई जिससे शिक्षा का व्यापार हो रहा है। शिक्षा घराने धनवान बनते जा रहे हैं। शासन के विद्या केन्द्रों को समुचित बजट ही नहीं देते। ऐसे में जिनके पास धन है, वे ही अपनी सन्तानों को शिक्षित-प्रशिक्षित कर एक सुशिक्षित, सुसभ्य, संस्कार वान, धनवान, खुशहाल, शासक, नागरिक बना रहे हैं शेष के लिए तो सरकार चलाने वाले नेताओं के झुठे आश्वासनों भाषणों से सन्तुष्ट रहना पड़ रहा है। इसी कारण 72 वर्षों की आजादी में लगभग 30-40 प्रतिशत नागरिक शिक्षित हो सके। 15-20 प्रतिशत अर्द्धशिक्षित 40-50 प्रतिशत शिक्षित होने की प्रतीक्षा ही कर रहे हैं।

शासन चाहे तो संविधान में प्रदत्त दायित्वों को पूरा करने हेतु सत्यशोधक रीति से बजट बढ़ाकर व्यवस्था स्थापित कर अपने सभी नागरिकों को सुशिक्षित कर सकता है।

आशा है अब मोदी सरकार भारत के संविधान में निर्धारित शिक्षा के अधिकार को मूर्त रूप देने हेतु ऐसी शिक्षा नीतियां बनाये जिससे रोजगार मूलक निशुल्क शिक्षा प्रत्येक नागरिकों का समान रूप से मिल सके।

24 सितम्बर सत्यशोधक समाज की स्थापना के 146 वे वर्ष में अभिनन्दन।

- रामनारायण चौहान

क्या आप जानना चाहोगे?

जोतीराव कहते थे— 'इस जगत का निर्माणकर्ता (निर्भिक) एक ही है। वह सर्वत्र व्याप्त, निर्गुण, निराकार और सत्यस्वरूप है विश्व के सभी स्त्री-पुरुष उसकी संतानें हैं। जिस प्रकार माँ को प्रसन्न करने के लिए या पिता से प्रार्थना करने हेतु किसी भी बिचौलिये कि आवश्यकता नहीं होती, उसी प्रकार सर्वव्यापी निर्माणकर्ता कि आवश्यकता नहीं होती उसी प्रकार सर्वव्यापी निर्माण कर्ता कि भक्ति करने के लिए किसी पंडे पुरोहित की आवश्यकता नहीं है। हर मनुष्य अपनी धार्मिक विधियां स्वयं कर सकता है। मनुष्य अपनी जाति से नहीं कर्मों से श्रेष्ठ बनता है।'

ऐसे बहुआयामी, क्रांतिकारी व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त करने से पहले उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक स्थिति आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करना उचित होगा।

सन् 1827 में जन्मे जोतीराव के पूर्वज महाराष्ट्र के सातारा नगर से 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'कटगुण' नामक गांव के निवासी थे। उनका कुलनाम 'गोन्हे' था। जोतीराव के परदादा कटगुण के 'चौगुला' थे। उस समय हर गांव के दो मुख्य अधिकारी हुआ करते थे— 'पाटिल' और 'कुलकर्णी जिन्हें 'चौधरी' और 'पटवारी' कहा जा सकता है। 'कुलकर्णी' प्रायः ब्राह्मण हुआ करते थे। इन दोनों के अधीन 'चौगुला' (सहायक) हुआ करता था जो इन अधिकारियों के रजिस्ट्रों, पुस्तकों आदि को लाने और ले जाने, लगान की वसूली करने और कटाई के दिनों में फसलों का निरीक्षण करने में सहायता करता था।

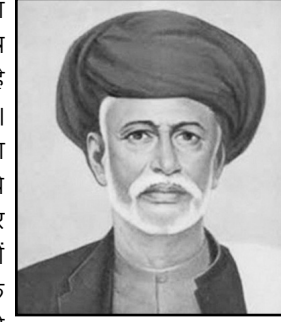
एक बार कटगुण के 'कुलकर्णी' से उनकी अनबन हो गई जिससे उसने उनका जीना हराम कर दिया। अंत में मजबूर होकर, निराशावश उन्होंने कुलकर्णी को मौत के घाट उतार दिया और उसी क्षण वे कटगुण से हमेशा के लिए विदा हुए।

वहां से चलकर यह परिवार पुणे जिले में आया और जिले के खानवडी नामक गाँव में बस गया। वहां परिवार में एक पुत्र ने जन्म लिया। नाम था शेटीबा। अकेली संतान प्रायः बड़े लाड़-प्यार में पलती है और इससे कभी-कभी संतान के बिगड़ने का भी खतरा होता है। शेटीबा भोले और खर्चीले थे जिसके कारण वे शीघ्र निर्धन हो गये और आजीविका की खोज में अपने परिवार समेत पुणे चले गये।

शेटीबा के तीन पुत्र हुए— राणोजी, कृष्णा और गोविंद। पिता कि दरिद्रावस्था के कारण इन तीनों को बचपन से ही रोजी रोटी कमाने में जुट जाना पड़ा। आरंभ में वे एक महाजन के यहां भेड़ बकरियों कि रखवाली का काम करने लगे। थोड़े बड़े हो जाने पर महाजन ने उन्हें अपने फूलों के व्यवसाय में नौकर रख लिया। मूलतः माली जाति के होने से उन्होंने उस व्यवसाय कि सभी बारीकियां सीखीं और कुछ दिनों बाद वे उसमें निपुण बन गये। तब उनका नाम चारों ओर फैल गया। जब उनकी कुशलता का समाचार पेशवा के कानों तक पहुंचा, तब उन्होंने उन तीनों को बुलाकर फूलों तथा फूलों से बनने वाली वस्तुओं की आपूर्ति करने का काम उनको सौंपा। तीनों भाईयों ने पेशवा की सेवा में कोई कोर कसर उठा नहीं रखी। तब उनकी सेवा से प्रसन्न होकर पेशवा ने उन्हें पुरस्कार में पुणे की पर्वती पहाड़ी के पास पैतीस एकड़ भूमि दे दी जो अब भी उनके वंशजों के पास है। फूलों के व्यवसाय के कारण उनका कुल नाम 'गोन्हे' लुप्त हो गया और लोग उन्हें 'फुले' के नाम से जानने लगे।

कुछ दिनों बाद शेटीबा का देहांत हो गया। आगे चलकर राणोजी अलग हो गये और उन्होंने परिवार की सारी संपत्ति हड़प ली। कृष्णा और गोविंद को फिर से निर्धनावस्था में आजीविका की खोज में निकलना पड़ा।

गोविंद पुणे के निकट ही एक गांव के खेत में काम करने लगे। खेत में उगाई हुई सब्जी- तरकारियां बेचने के उद्देश्य से उन्होंने पुणे में उगाई हुई सब्जी-तरकारियों बेचने के उद्देश्य से उन्होंने पुणे में एक दुकान लगा ली। वह थोड़े दिनों में अच्छी चलने लगी, तो वे उसी दुकान से गुजर-बसर करने लगे। आगे चलकर पुणे के निकट के धनकवडी नामक गांव के निवासी झगड़े की पुत्री चिमणाबाई (मराठी भाषा में 'बाई' शब्द का प्रयोग हिन्दी शब्द 'देवी' के अर्थ में किया जाता है।) के साथ उनका विवाह हुआ। इस दंपति के



दो पुत्र हुए। एक का नाम था राजाराम और दूसरे का जोतीराव। जोतीराव का जन्म सन् 1827 में हुआ।

जोतीराव के जन्म से कुछ वर्ष पहले महाराष्ट्र में पेशवा राज्य समाप्त हो चुका था। शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित राज्य की बागडोर लगभग सौ वर्षों तक ब्राह्मण पेशवाओं के हाथों में रही, लेकिन उन्होंने शिवाजी महाराज कि न्यायोचित तथा गुणग्राही शासन प्रणाली को नष्ट-भ्रष्ट कर उसे अन्यायपूर्ण और जाति प्रधान बनाया। इससे स्वाभाविक रूप से आंतरिक कलह बढ़ते गये।

17 नवंबर 1818 को बालाजी नातू नामक गद्दार ने अपने हाथों से, पुणे के शनिवारवाड़े पर लहराने वाला पेशवाओं का ध्वज उतारा और उसके स्थान पर अंग्रेजों का झंडा फहराया। इसी के साथ पेशवा राज्य का अंत हुआ। उस समय दूसरे बाजीराव पेशवा गद्दी पर थे।

उस जमाने के शंकराचार्य सन्यासी वृत्ति अंगीकार नहीं करते थे। वे भारी मूल्य के वस्त्र पहनते थे और गृहस्थ की तरह परिवार के साथ रहकर सभी ऐहिक सुखों का लाभ लेते थे। वे गद्दीदार पलंग पर सोते और कमसिन दासियां उनके पांव दबाती।

एक ओर हिंदू धर्म के रक्षक शंकराचार्य का यह हाल था, तो दूसरी ओर रंगीन मिजाज वाले पेशवा दूसरे बाजीराव का वह हाल था कि पूछिए मत। वे स्वेच्छाचारी, दुराची, अपात्र और पराक्रमहीन थे। उनका पांचवां ब्याह श्री हरिपंत ढमढेरे की कन्या के साथ हुआ। युवा पत्नी मिलने के कारण बाजीराव प्रसन्न हो गये और उन्होंने एक सरदार अंबीकर की जागीर हथिया ली और वह श्री ढमढेरे के हवाले की। श्रीमती गंगाबाई राजमाचीकर नामक युवा विधवा के साथ वे विकृत आचरण किया करते थे। वे हमेशा व्यभिचारिणी स्त्रियों से घिरे रहते थे। इस दुराचारी के प्रस्तावित दौरे के भय से पुणे से सौ किलोमीटर दूर 'वाई' नामक गांव की कई नारियों ने कुंओं में कूदकर प्राण दे दिये थे। ऐसा लंपट पेशवा होने पर राज्य के मटियामेट होने में कितनी देर लगती।

उस समय शक्ति पंथियों ने नग्न होकर ईश्वर पूजा करने की प्रथा का अवलंब कर निर्लज्जा की हद कर दी थी। शाक्य प्रायः वाममार्गी होते थे और अपने संप्रदाय में विहित मद्य, मांस आदि को अग्राह्य नहीं मानते थे, वे नारी को शक्ति का प्रतीक मानकर, उसकी पूजा तथा उसके सेवन में रत रहते थे। इस पंथ में अधिकांशतः ब्राह्मण ही हुआ करते थे। शाक्त पंथ की सीख थी— "जितना अधिक पापाचार करोगे, उतने अधिक भगवान शंकर के प्रिय बनोगे।" जैसे बिना देखभाल वाले वन में बेकार फसल पनपती है, वैसे ही उस नीतिहीन राज्य में दुराचार का बाजार गर्म था। वीर तथा ईमानदार सरदार राज्य छोड़कर अन्यत्र चले गये और बेशर्म तथा तलवे चाटने वाले स्वार्थी सरदार बाजीराव की खुशामद करके जागीरदार बनने की कोशिश करने लगे थे। इन सभी दुर्गुणों का दृश्य ऐसा भयानक और घिनौना था कि उसे देखकर तत्कालीन अंग्रेज अधिकारी भी सन्न रह गये।

पेशवा शासन के उत्तर काल में शासन के सभी ऊँचे पद ब्राह्मणों विशेषकर, चित्पावन ब्राह्मणों को दिये जाते थे। अन्य जातियों के सक्षम व्यक्तियों के लिए शासन में कोई स्थान नहीं था। शासनकर्ता होने के कारण ब्राह्मण शासन से अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर लेते थे। उनकी भूमि का लगान, अन्य लोगों के लगान से आधा हुआ करता था। ब्राह्मणों को दान देना पुण्य का काम माना जाता था, अन्य जातियों के लूलो-लंगडों को भी दान नहीं दिया जाता था। बाजीराव सहस्रों ब्रह्मभोजों का आयोजन करते और ब्राह्मणों को अधिक से अधिक दान देकर अपने लिए पुण्य जुटाते थे, जो ब्राह्मण सामने आ जाता उसे दान दिया जाता था। पर्वतो पहाड़ी की तलहटी में दक्षिणा बाटी जाती थी। वह स्थान 'रमणा' नाम से मशहूर था। जिस ब्राह्मण के पास शालग्राम हुआ करता था, उस ब्राह्मण को दान दिया जाता था। जब शालग्राम पर्याप्त संख्या में न मिलते, तब ब्राह्मण पेशवा की पशुशाला में चले जाते। पेशवा के नौकर कुँटों की लीद सुखाते और उसे शालग्राम के रूप में बेचते। ब्राह्मण उस बनावटी शालग्राम को तुलसी की पत्तियों और फूलों से ढांकता बाजीराव बड़े भक्तिभाव से उन शालग्रामों को नमस्कार करते और दान-दक्षिणा देकर पुण्यार्जन करते।

सामाजिक चिंतन (भाग-27)

सामाजिक सरोकारों के लिये विश्वसनियता

एक जमाना था, जब सामाजिक सरोकारों के काम जैसे धर्मशाला बनाना, मंदिर मस्जिद बनाना, विद्यालय-महाविद्यालय बनाना, हास्पिटल बनाना, आवागमन के साधन बनाना, प्रायः जरूरत मंदों की सहायता करना आदि, राजा महाराजा जागीरदार ही ये परोपकारी कार्य करते थे। समय बदलता गया कई सामाजिक कार्य समाज के जागरूक लोग अपने परिचितों को विश्वास में लेकर धन एकत्र कर सार्वजनिक कार्य करने लगे, जिसका परिणाम है कि, ये परम्परा वर्तमान तक प्रचलित है। सार्वजनिक कार्य कराने हेतु जो व्यक्ति आगे आता है, उसकी विश्वसनियता होना महत्त्वपूर्ण है और आज के युग में तो कई ऐसे लोग भी सामने आये हैं जो, सार्वजनिक कार्य करने हेतु धन एकत्र कर अपना हित साधन में लगे हैं, इस कारण जो निस्वार्थ भाव से परोपकार के लिये आगे आकर सेवा भाव से कार्य कर रहे हैं, उन्होंने ऐसे अनेकों सार्वजनिक निर्माण कार्य समाज सेवा के कार्य कर दिये जो सदा के लिए यादगार बन गये हैं। ऐसे समाज सेवियों का सभी सम्मान कर सहयोग कर रहे हैं।

हम समझते हैं कि सामाजिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतीराव

फुले प्रथम शिक्षिका सावित्री बाई फुले ने जो सार्वजनिक सेवा के कार्य हाथ में लिये उन्हें सफलता इसलिए मिलती रही कि उनके द्वारा जब-जब समाज से आर्थिक पक्ष की आवश्यकता होती थी, उदार भाव से जो जिसकी जैसी हैसियत होती थी वह उनकी आर्थिक सहायता करने हेतु तत्पर रहते थे। फुले दम्पति जो भी धन एकत्र करते थे उसका आय-व्यय का हिसाब समय-समय पर करते थे, इस कारण फुले दम्पति पर विश्वास बना रहा। फुले दम्पति के कार्यों की जनमानस में जैसे-जैसे जानकारी बढ़ती गई, उसी भाँति उनके विचारों आदर्शों को मानने वाले समझने वाले अपनाने वालों की कतार भी बढ़ते बढ़ते विश्वस्तर तक पहुँच रही है। देश के विभिन्न अंचलो में उनकी प्रतिमाएं लग रही हैं, नामकरण हो रहा है। राजनैतिक पार्टियों के नेता लोग भी इस दम्पति के जीवन से प्रेरणा लेकर जनसेवा का आह्वान कर रहे हैं।

मध्य प्रदेश में युगपुरुष रामजी महाजन 14 सितम्बर 1935 को बेतुल जिला के प्रभात पट्टन के माली परिवार में जन्में, वे बचपन में ही आजादी के आन्दोलन में आगे बढ़ गये थे, बाद में सार्वजनिक जीवन में उतरे पंचायत के सरपंच

से लेकर प्रदेश के मंत्री, पिछड़ा वर्ग आयोग के प्रथम अध्यक्ष तक बने वे जब चुनाव लड़ते थे तो अपनी पुश्तैनी जमीन बेचकर खर्च कर देते थे, किसी चन्दा नहीं लेते थे। भ्रष्टाचार से आजीवन दूर रहे लेकिन सार्वजनिक कार्यों के लिए चन्दा लेने निकलते तो जैसे जिसकी हैसियत होती थी, उदार भाव से चन्दा देकर योगदान बनने में जनमानस खुशी महसूस करते थे। मैं एवं अम्बाडकर जी प्रायः उनके साथ रहते थे। वे अपने भाषण में कहते थे।

“मर जाऊँ मॉगू नहीं, अपने तन के काज। परमारथ के वास्ते, मोहे ने लागे लाज।”

याने वे सार्वजनिक कार्यों के लिए चन्दा लेने हेतु शर्मिदा नहीं होते थे। इसी कारण महात्मा फुले भवन निर्माण के लिये प्राप्त राशि अम्बाडकर जी सौंप देते थे। उन्होंने सार्वजनिक कार्यों के लिये धनराशि प्राप्त करने हेतु विश्वसनियता बन ली थी। दिनांक 14 अगस्त 1999 को उनका

परिनिर्वाण हो गया।

वर्तमान युग में सामाजिक कार्यों के लिये धनराशि देने वाले भी शंका करते हैं, क्योंकि कुछ निहित स्वार्थी तत्वों ने सार्वजनिक कार्यों के लिए चन्दा लेकर अपना भला करने में राशि व्यय करदी व विश्वसनियता को कमजोर कर दिया है फिर भी समाज में अनेक लोग अनेक संस्थाएं चन्दा लेकर बड़े से बड़ा सार्वजनिक कार्य कर रहे हैं, लोगों में उनकी विश्वसनियता बनी हुई है, इसलिए चन्दा देने वालों को भी खुशी होती है।

प्रत्येक मानव परोपकार के लिए कुछ न कुछ अपनी क्षमता से जनसेवा हेतु दान अनुदान देने हेतु आगे आने का प्रयास करता है, और दान-अनुदान लेने वाला सारा आय-व्यय- ‘दूध का दूध एवं पानी का पानी’ कर हिसाब साफ सुथरा रखता है, इसी कारण अनेक सार्वजनिक कार्य समाज में दिखाई दे रहे हैं।

हाँ दान-अनुदान कहाँ दिया

जाय यह गम्भीर चिन्तन का विषय है। बुद्धिमान लोग तो वैज्ञानिक आधारों पर जो खरा साबित हो वहाँ सहायता करते हैं। एवं जो देखा-देखी अपनी महत्त्वकांक्षा पूरी करने हेतु जो सहायता करते हैं या किसी की निगाह में फिजुल खर्च हो सकती है, कोई पुण्य कार्य ठहराने लग जाते हैं। वहाँ दानशील बन जाते हैं। इसी कारण देश में अरबों रूपयों की सम्पत्ति अनुपयोगी एकत्र होने समाचार पढ़ने सुनने को मिल जाता है। अब यह चयन उपयोगी अनुपयोगी का तो प्रत्येक इन्सान को करना है

यह विकल्प है कि वैज्ञानिक आधारों पर सही परख कर सहयोग करे तो समाज कल्याण में काम आयें। शिक्षा स्वास्थ्य धनहीन के जीवन स्तर का ऊँचा उठाने, जैसे परोपकारी कार्यों में सहायता करना सामाजिक सरोकारों के लिये विश्वसनियता ही बड़े से बड़ा जनसेवा-परोपकार कार्य पुण्य का काम है।

रामनारायण चौहान




आपसी बात

शिक्षा ईशारा अब यह कालम इसलिये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातचित होती है इसका रिकार्ड श्री रश्मि फर्ज समझ रहा है। तो ब्राइये मो. 09990952171 या फोन नं.01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो श्री बातचित होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगे।

माह - जुलाई से अगस्त 2019

- राजस्थान- हरगोपाल भाटी (झालावाड़), सांवरमल सैनी (सीकर), एड.अनुभव चन्देल, पूनमचन्द कच्छावा, बुधसिंह सैनी, दिनेश विश्नोलिया, राम प्रसाद सैनी (जयपुर), बंशीलाल माली (भीलवाड़ा), भगवती माली (डेगाना), सुरेश कच्छावा (डीडवाना)।
- मध्य प्रदेश - जगदीश सैनी (जबलपुर), डॉ. प्रेमलता सैनी, छाया सैनी, आर.डी. माने, गजानंद भाटी जगदीश सोलंकी, अविनाश फसाटे, मधु अम्बाडकर, जी.पी. माली, राजेन्द्र अम्बाडकर, सुनील अचारकाटे, शकुन्तला अम्बाडकर (भोपाल), लीलाधर धारवे, गजानन्द रामी, अशोक भाटी, हेमन् सोनोने सुरेन्द्र सांखला (उज्जैन), विनोद मकवाना कैलाश वाघेला (बड़नगर), राजेश दौड़के (छिन्दवाड़ा),कैलाश पटेल (आगर), परबतलाल चौहान (पिपलोन), यशवंत नेहरू (पीपलरावाँ), बसंत कापडिया (पिपरिया), नारायण जाधव, (हरसोला), यादवलाल चौहान, विष्णु वातुने, सत्यनारायण चौहान (इंदौर)।
- महाराष्ट्र- शंकरराव लिंगे (सोलापुर), राजेन्द्र सैनी, एल.के. माली (मुम्बई), महेश गणगणे (अकोला), किशोर कन्हारे (नागपूर)।
- उत्तरप्रदेश- इन्जि. एस.बी. सैनी (कानपूर), श्रीचन्द सैनी, (मेरठ) कप्तानसिंह सैनी (मथुरा),

- सोहनलाल श्रीमाली, चन्दलाल श्रीमाली (इलाहाबाद), अवनीश सैनी (गाजियाबाद)।
- गुजरात / गंगाराम गेहलोत, (अहमदाबाद), उशा रामी (आनन्द)।
- छत्तीसगढ़- हरीश पटेल, यज्ञदेव पटेल, (बालोद), हेमंत गणेश्वर (कोरवा)।
- बिहार- संजय मालाकार (पटना), बी.एन. सैनी (डेयरी-आन-सान)।
- हिमाचल प्रदेश- अनील सैनी (पोन्टा साहेब),।
- हरियाणा- हेमन्त सैनी (रेवाड़ी), राजेन्द्र कुमार सैनी (लाड़वा), सरदार गुरुदयालसिंह सैनी पूर्व सांसद गुरुनाम सिंह (कुरुक्षेत्र) ओ.पी. सैनी (अम्बाला) राजकुमार सैनी (गुडगांव),
- कर्नाटक - एन.एल. नरेन्द्र बाबू (बेंगलोर),
- दिल्ली- चौ.इन्दराजसिंह सैनी, खुशीराम सैनी, आजादसिंह सैनी, रमेश कुमार सैनी, के.पी. सिंह, सी.ए., विनय सैनी, इन्जी. श्याम सिंह सैनी, पवन सैनी, सुरेश सैनी, गीता सैनी, जी.एल. सैनी, कृष्णदेव भारल, सुमन सैनी, डॉ. नरेन्द्र सैनी,
- जम्मू एण्ड कश्मीर- श्री कृष्ण सैनी (जम्मू)।
- तमिलनाडू- व्ही. एम. पल्लव मोहम वर्मा (चैन्नई)।
- पंजाब - हरभजनसिंह सैनी (पटियाला)



महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान
 ए-103, ताज अपार्टमेंट्स, गाजीपुर, दिल्ली -110096
 फोन/फैक्स नं. 011-45082626, मो. : 09990952171
 E-mail: phuleshikshansansthan@gmail.com Web: www.phuleshikshansansthan.org.

आजीवन सदस्यता फॉर्म

मैं महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।
 मैं अपनी आजीवन सदस्यता राशि रु. 3000/- शिक्षादान की राशि रु. 11000/-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रोहिणी कोर्ट ब्रांच, दिल्ली, IFSC कोड नं. SBIN0010323 के कर्न्ट एकाउंट नं. 32240494101 में जमा कर काउन्टर स्लिप संलग्न कर रहा/रही हूँ।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है :-

| | |
|-------------------------------|------------------------------|
| 1. नाम _____ | |
| 2. पिता/पति का नाम _____ | |
| 3. जन्म तिथि _____ | 4. ब्लड ग्रुप _____ |
| 5. शिक्षा _____ | Passport Size Photo |
| 6. व्यवसाय _____ | |
| 7. वोटर कार्ड नं. _____ | 8. इडिडिंग लाइसेंस नं. _____ |
| 9. आयकर पेन कार्ड नं. _____ | 10. आधार कार्ड नं. _____ |
| 11. स्थायी पता _____ | पिन कोड _____ |
| 12. पत्र व्यवहार का पता _____ | पिन कोड _____ |
| 13. फोन/फैक्स नं. _____ | 14. मोबाईल नं. _____ |
| 15. ई-मेल _____ | |

दिनांक: _____ प्रभारी के हस्ताक्षर (कोड नं.) _____ आजीवन सदस्य के हस्ताक्षर _____

कार्यालय उपयोग हेतु


श्री..... ने रसीद नं. दिनांक से रु. 3000/- जमा करा दिए है।

सदस्यता कोड नं.: _____ आजीवन सदस्यता प्रदान की जाती है। अध्यक्ष _____ कोषाध्यक्ष _____

“अज्ञानता से भय पैदा होता है, भय से अंध विश्वास पैदा होता है, अंधविश्वास से अंधभक्ति से व्यक्ति का विवेक शून्य हो जाता है,

वह इन्सान मानसिक गुलाम होता है। अज्ञानही -ज्ञानी बनो।

(महात्मा बुद्ध)



THE STUFF LEGENDS ARE MADE OF CYNTHIA STEPHEN

The story of the continuing struggle for modernity and education for Indian women and the caste-oppressed, cannot be narrated without mentioning the role of Savitribai Phule, the wife of the social revolutionary Mahatma Jotiba Phule. Ten Years before the birth of the celebrated Pandita Ramabai - the pioneering women scholar, writer, social worker and path-breaking campaigner for women's right-savitri phule, a woman from the shudra Community, had earned for herself the distinction of being the first woman teacher in the country. During her Long and illustrious public life, she also published four books, including two volumes of poetry, headed the Satyashodak Samaj after Mahatma phule passed away, and broke new ground in socio-cultural creativity.

The phules lived in Maharashtra at time, when the closely enmeshed religious, political and social structures were under the control of brahmnical and caste-feudal forces. As phule has stressed in many of his writing, the highly restrictive caste structures of society subjugated the toiling castes and communities, exploiting their labour, ignorance and fervour. The condition of women of all castes and classes was even worse. They were devalued as individuals and treated as chattels, providing domestic, economic and sexual labour in their family setting. There was no public role for them.

That phule himself was educated is a miracle, since he was from a shudra caste

and education was still a distant dream for shudras and atishudras. The young phule's intelligence and eagerness to study had impressed two of his neighbours, one a Muslim teacher and the other a Cristian, who encouraged his father to put him in a school where he performed very well. Mean while, he was married to Savitribai, even before he turned 13. The next year he was admitted to the Scottish Mission School in pune. This Exposed him to an English Education and he read Thomas Paine's famous book The Right of Man. The book made a powerful impact on him. He was also inspired by the work of christian missionaries in India, by Shivaji, Martin Luther, and George Washington. He had a friend, sadashiv Govande, who along with Walvekar, another friend, became the core team to work on a number of innovative ideas for social change, At a very young age, jotirao had revolutionary thoughts about education, especially of women. He insisted upon Savitribai taking time off from her household duties to read and write; he became her first teacher.

The phule couple had to face stiff opposition for their educational activities, especially promotion of women's education. According to the tradition, justified by many brahmnical texts, women were not to receive education, because it was believed "they would start writing letters to all. The food her husband ate would turn to worms and he would die an untimely death." But phule was not in thrall of such



misogynistic superstitions. He had started dreaming of freeing people from brahmnical patriarchy and caste enslavement. To this end, he began to work on several fronts. He published the first challenging critiques of brahmnical religion, campaigned for mass education, and most important of all, stressed the need for the oppressed people of India - street, shudras and atishudra- to come together to smash slavery. For this, he founded a society called the Satayashodhak samaj. He was convinced that the existing reform movements within Hinduism were insufficient to bring any radical change. He formulated a belief in a compassionate Creator who was interested in the liberation of all human beings, irrespective of caste, class and gender. His religious vision was finally propounded as the sarvajanic satay Dharma, or the Universal Religion of Truth.

Phule's dearest dream was to see the women of India would be able to enjoy their full human rights. And what better way to achieve this than to empower them through education? He told

his friend Sadashiv Govande, "The Lord was Pleased to excite in me a desire to better their condition through means of education. Female school are more necessary than male ones."

Savitribai was Jotirao Phule's first, and most important ally in the fulfillment of this vision. She stood like a rock by his side in this mission. Some school for girls had already been started in India by the Christian missionaries in cities like Calcutt, Bombay, Nasik, Amhed nagar and Surat. The girls who went to these schools were usually Christian, orphans or from low castes and poor families. But the fact very few girls alien missionaries. There were no government or private schools for girls run by Indians.

The Phule couple decided to start school for girls, especially from the shudra and atishudra community so that parents of girls could send their daughters without bothering much. But there were Christian missionaries. In 1846-47 Savitribai with another woman, Fatima sheikh, started a formal school in Ahmednagar and did quite well. So phule decided that Savitribai and would train as teacher and run the school.

As a teacher A building was found in pune to house the school which started in 1848, with nine students and a headmistress. Sadashiv Govande sent books from his home. Sadashiv Govande sent books from Ahmednagar. It functioned for about six months and then had to be closed down.

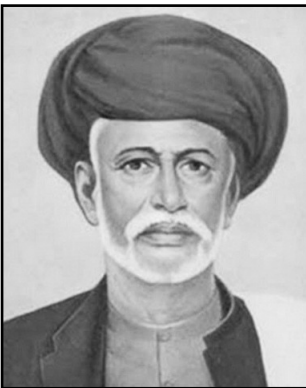
Another building was found and the school reopened a few months later. The young couple faced severe opposition from almost all sections. Savitribai was subject to intense harassment everyday as she walked to school. Stones, mud and dirt were flung at her as she passed. She was often abused by groups of men with orthodox beliefs who opposed education for women. She braved this onslaught for many weeks. Her response was, "God forgive you. I am doing my duty. May God bless you!" But later, fed up with constant harassment and vicious opposition she almost gave up. But phule gave her hope, love and encouragement. She went to school wearing an old sari after she reached there. Finally, the pressure on her eased when she was compelled to slap one of her tormentors on the street, after which she was left alone. Later, a peon was employed to escort her to and from the school.

Once the opponents of female education realized that the phule couple would not easily give in, they stepped up their opposition. Intense pressure was brought by the barman on Phule's father, Govindro, to convince him that his son was on the wrong track, that what he was doing was against the Dharma. Finally, things came to a head when Phule's father told him to leave home in 1849. Savitri preferred to stay by her husband's side, braving the opposition and difficulties, and encouraging phule to continue their educational work.

Cont. Next Month

सत्य शोधक समाज भारत की आवश्यक आवश्यकता 'सितम्बर माह की डायरी'

भूमिका :- सितम्बर माह अपने में कई विशेषतायें समेटे हुए है जैसे 24 सितम्बर 1883 को महामना फूले द्वारा 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना, ताकि अन्धविश्वास, पाखण्ड के मकड़जाल से भारतीयों को मुक्त करवाकर भारत को प्रगतिशील देश बनाया जा सके।



इसी सितम्बर माह में दक्षिण के महामना पेरियार रामासामी का जन्म दिन है तो इसी सितम्बर माह की 24 तारीख 1932 को गान्धी, अम्बेडकर के मध्य पूना पैक्ट हुआ था जिसमें बाबा साहब जीती बाजी (अंग्रेजों द्वारा साइमन कमीशन रिपोर्ट लागू करने का निर्णय लिया था, निर्णय दलितों के हित में था) गान्धी जी से हार गये थे। उसका परिणाम 70 साल बीतने पर भी, समता मूलक संविधान के होते हुये भी दलित उत्पीड़न के रूप में आज भी दिखाई पड़ रहा है।

आख्या :- महामना फूले ने जून 1883 में "गुलामी नामक पुस्तक लिखी जिसमें पुराणों के खोखलेपन एवं कल्पित कहानियों का पर्दाफाश किया गया। यह कार्य कुछ उसी प्रकार का था जैसे अच्छा अध्यापक पहले विज्ञान के सिद्धान्तों का उल्लेख कक्षा में करता है फिर उन्हीं सिद्धान्तों का सत्यापन वह प्रयोगशाला में करवाता है।

गुलामी नामक पुस्तक का जून 1883 में लेखन कक्षा के लिखित कार्यों जैसा है परन्तु 3 माह बाद सत्यशोधक समाज की स्थापना (24.09.1883) प्रयोगशाला में उन कार्यों को सत्यापन करने के समान है। महामना फूले का अधूरा कार्य 'सत्यशोधक समाज' की नीतियों पर चलकर ही आज पूरा किया जा सकता है।

यह भी स्मरण कराना है कि 1976 में लागू भारतीय नागरिकों के कर्तव्यों को यदि

संविधान में पढ़े तो वे सब कर्तव्य 'सत्यशोधक समाज' में 1883 में ही महामना फूले ने समाहित कर दिये थे

'सत्यशोधक समाज की नीतियाँ'

1. साक्षर नहीं शिक्षित बनें, अपने समाज को भी शिक्षित करें, विद्या देने की अभिनव योजना हर गाँव, गली में खड़े अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचायें, क्योंकि विद्या सभी विकासों का मुख्य द्वार है।
2. परम्परावादी न होकर यथार्थवादी, वैज्ञानिक धारणा के अनुयायी बनें। सावन के माह में पहले धान लगायें, कृषि कार्यों को निपटायें, काँवर यात्रा, शिव मन्दिरों में गंगाजल चढ़ाकर समय, धन बर्बाद न करें
3. पहले जानो तभी मानो। यदि प्राण प्रतिष्ठा से पत्थर के देवी देवता में जान आ जाती है तो फिर वे मंत्र पढ़ने वाले अपने मृतक माता-पिता को जिन्दा क्यों नहीं कर लेते हैं। स्मरण रखें कि 'ई' स्वर तो है परन्तु ईश्वर नहीं है।
4. यदि कर्मकाण्ड, पाखण्ड से लाभ

होता तो बीमारी के लिए अस्पताल एवं शिक्षा के लिए कालेजों की स्थापना क्यों करनी पड़ी। लक्ष्मी पूजा से धन मिलता तो भारत आज गरीब न होता

5. नारी को सम्मान दिये बगैर देश कभी प्रगतिशील नहीं बन सकता अतः स्त्री शिक्षा पर जोर देकर पहले 50 प्रतिशत स्त्री आबादी को विकसित करना होगा।

6. अपने माता-पिता की सेवा ही तीर्थ हैं उनकी मृत्यु के बाद मुण्डन, तेरहवीं में पैसा कर्ज लेकर सामाजिक कुरीतियों का बहिष्कार करना एवं परोपकारी बनना।

7. महज दिखावे का भोंडा प्रदर्शन, शादी में न करके, शादी की स्मृति में पौधे लगायें। शादी दिन में करें। बेकार का खर्च बचाकर गरीब बेटियों की शादी एवं पर्यावरण सुधार पर खर्च करें राष्ट्रीय हित के रचनात्मक कार्यों में हाथ बटायें।

एस0बी0 सैनी (B.E.)
पूर्व मण्डल अभियन्ता BSNL
महामंत्री पंचशील सोसाइटी कानपुर
मो0: 9415407576



देश भर के समाचार

● झालावाड़ (राज.)- संत लिखीदास की 259वीं पुण्यतिथि 19 जुलाई को मनाई इस अवसर पर हरगोपाल भाटी, सोनु भाटी, डॉ. विनोद सैनी, शिवानंद बारवाल प्रकाश भाटी, कैलाश पुष्पद ने गुणवत्ता शिक्षा पर जानकारी दी एवं एकजूटता स्थापित करने का आह्वान किया।

● तेलहारा (महा.)- 4 अगस्त को आ.भ. माली महासंघ द्वारा प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान सर्वश्री महेश गणगणे, शंकरराव लिंगे, पूर्व अध्यक्ष महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान रमेश हिरलकर जगन्नाथ ढोणे, (पूर्व विधायक) गौतम क्षीरसागर आदि पदाधिकारियों द्वारा किया गया।

● नाथद्वारा (राज.)- महिला राजस्थान केसरी दंगल में मनीषा माली ने जीत कर खिताब हासिल किया। बधाई।

● दिल्ली - 4 अगस्त को पूर्व दिल्ली सैनी सभा की मिटिंग जी. एल. सैनी प्रधान की अध्यक्षता में हुई जिसमें जांजगीर (छग) से पिकल माली संजीत माली ने भी भाग लिया। शिवराज सैनी, रमेश सैनी, राजकुमार सैनी ने शिक्षा के लिए आह्वान किया।

● जयपुर (राज.)- सैनी समाज कर्मचारी अधिकारी विकास संस्था के मुख्य संरक्षक ओ.पी. सैनी, ज्योतिष संरक्षक चेतन देवड़ा, पी.डी. डॉ. जी.एल. वर्मा बुद्धसिंह सैनी (संस्थापक) एम. पी. सैनी, भागचन्द सैनी आँकारमल सैनी, हनुमान प्रसाद सैनी ए.के. गेहलोत अध्यक्ष राजूमल सैनी बने बधाई।

● दिल्ली- नीतिन सैनी आत्मज जितेन्द्र सैनी ने 6 से 8 वर्ष की तैराकी प्रतियोगिता में स्टेट गोल्ड मेडल जीता। बधाई।

● नागपुर (महा.)- महात्मा फुले शिक्षण संस्था का 60वाँ हीरक महोत्सव 16 सितम्बर को कविर्वम सुरेश भट्ट सांस्कृतिक सभागार रेशिम बाग में आयोजित।

● चण्डीगढ़- 11 अगस्त को सैनी भवन सेक्टर 24 में अखिल भारतीय कुशवाह महासभा का सम्मेलन उक्त जानकारी अनुपम सैनी, पौंटा साहिब ने दी।

● सोलापुर (महा.)- 12 अगस्त को 10वीं एवं 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान समारोह चौथा रक्तदान शिविर एवं 75 वर्ष पूर्ण करने वाले वरिष्ठ नागरिकों का सरकार समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर पूर्व कुलगुरु अहिल्या देवी होल्कर विद्यापीठ, आमदार, सिद्धराम म्हेत्रे पूर्व गृह राज्य मंत्री, रंजन भाऊ, गिरमें एमडी सासवड़ माली शुगर फेक्ट्री माली नगर अध्यक्षता शंकरराव लिंगे राष्ट्रीय अध्यक्ष अ. भा. अतिथियों द्वारा किया गया।

● नागपुर (महा.)- 25 सितम्बर को माली समाज की समस्याओं का निदान हेतु लोक जागरण का आयोजन महात्मा फुले सांस्कृतिक सभागृह रेशिमबाग में होगा एवं 16 सितम्बर को खुला अधिवेशन कविवर सुरेश भट्ट सभागृह रेशिम बाग में - सम्पर्क प्रा. अरुण पंवार 9822697899 महादेव श्री खण्डे 7447663381, पूर्व विधायक अशोक मानकर 9823013973, सुरेन्द्र आर्य 9422148460ए रविन्द्र अम्बाड़कर 9422101717, निलम चोपड़े 9422103282 गुलाब चिमटे 9284346845।

प्राचार्य अरुण पंवार ने बताया कि मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीस केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी पूर्व उपमुख्यमंत्री छगन भुजवल आदि अतिथि भाग लेंगे। इस अवसर पर ज्ञापन देकर मांग रखी जायेगी कि फुले दम्पति को भारत रत्न दिया जाय। महात्मा फुले द्वारा प्रथम विद्यालय भिड़वाड़ा पुणे का जीर्णोद्धार किया जाय।

● डीसा (गुजरात)- माली समाज सोलंकी परिवार की डीसा से भीनमाल तक यात्रा 5.09.19 को उक्त को जानकारी महेन्द्र कुमार पर धान।

● दारुवा (महा.) - आ. भ. माली महासंघ द्वारा 12 अगस्त को प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान समारोह संजय ठावरे डा. प्रवीण बनसोड़, विनोद इंगले, राजेन्द्र घाटे, अर्चना उडाखे, रवि तरटे आदि द्वारा किया गया।

● छिन्दवाड़ा (मप्र.)- महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण समिति की बैठक 12 अगस्त को पटेल कालोनी में विनोद माली की अध्यक्षता में हुई।

● छिन्दवाड़ा (मप्र.)- महात्मा ज्योतिबा फुले सामुदायिक भवन भूमि पूजन 11 अप्रैल को किया। उक्त जानकारी इच्छित इंगले आयुक्त नगर पालिका एवं राजेश दौड़के द्वारा दी गई।

● बुड़दा खेड़ा (उप्र.)- भागीरथ आर्मी द्वारा परीचय सम्मेलन एवं संगठन विस्तार का आयोजन सूरज सैनी की उपस्थिति में हुआ।

● बरनाला नवाशहर (पंजाब)- सैनी समाज द्वारा पंच एवं विधायक अंगद सिंह की माताजी गुरीलबल कौर सैनी की उपस्थिति में शुभ सैनी द्वारा तीज का उत्सव मनाया।

● नागौर (राज.)- सैनिक क्षत्रिय माली संस्थान के निमार्ण धीन छात्रावास भवन में नगर परिषद के सभापति कृपाराम सोलंकी संस्थान अध्यक्ष रामस्वरूप पंवार उपाध्यक्ष रामजस भाटी द्वारा जंवरिलाल देवड़ा व परिवार जन हैदराबाद द्वारा छात्रावास हेतु भूमिदान करने हेतु भामाशाह सम्मान किया।

● भीलवाड़ा (राज.)- 2जून 2019 आयोजित सामूहिक विवाह समारोह आयोजित किया जायेगा। उक्त जानकारी। बंशीलाल माली अध्यक्ष गोपाल माली ने देते हुए। बताया कि इस अवसर पर प्रभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा।

● जोधपुर (राज.)- माली युवा संगठन का पवन सोलंकी नेतृत्व में सभागम हुआ जिससे शिक्षा चिकित्सा एवं राजनीति पर विचार विमर्श किया गया।

● सांचोर ((राज.)- माली समाज छात्रावास में भगवान राम माली की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में पर्यावरण एवं वनमंत्री ने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए 15 लाख की सहायता देने की घोषणा की।

● भरतपुर (राज.)- महात्मा ज्योतिबा फुले छात्रावास में सैनी समाज का प्रेम मिलन समारोह मांगीलाल अलवर की अध्यक्षता व शुभलता सैनी पंजाब के मुख्य अतिथि में हुआ।

● मेड़ता सिटी (राज.)- नागौर सभापति कृपाराम सोलंकी एस.डी.एम. काशीराम चौहान, तहसीलदार विश्वराम देवड़ा, समाज अध्यक्ष ओमकारम कच्छावा, जिलाध्यक्ष गीता देवी सोलंकी, ताराचन्द गेहलोत, ओमप्रकाश सांखला, संदीप सैनी, मानसी सैनी ने आह्वान किया कि महात्मा जोतीराव फुले सावित्री बाई फुले के आदर्शों के अनुरूप समाज के सभी परिवार अपने बच्चों को शिक्षित प्रशिक्षित करने हेतु पहल जारी रखे।

● कैथल (हरि.) कुरुक्षेत्र सांसद नायब सैनी ने अमरगढ़ गामडी सैनी धर्मशाला में आयोजित समारोह में बच्चों को शिक्षित करने का आह्वान किया। रामफल सैनी ज्योति सैनी, विक्की सैनी आदि आभार प्रकट किया।

● करोली ((राज.) - महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति के जिला समन्वयक शिवचरण माली को संयोजक एवं युवा समन्वयक प्रेमसिंह माली को सहसंयोजक बनाये जाने पर बधाई।

● सुमेरपुर (राज.) - महात्मा ज्योतिबा फुले राष्ट्रीय संस्थान अध्यक्ष मोतीबाबा फुले पूर्व आयुक्त शंकरलाल गेहलोत, संस्थान अध्यक्ष भंवरलाल गोपाल की उपस्थिति में संत लिखीदास सेवा संस्थान के चुनाव में शंकरलाल गेहलोत समन्वयक भंवरलाल गोपाल अध्यक्ष सहित पदाधिकारियों का चुनाव हुआ।

● कुचेरा नागौर सभापति कृपाराम सोलंकी कृपाराम देवड़ा ओम प्रकाश सांखला नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष पुखराज टांक आदि ने प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान किया। घनश्याम भाटी पुखराज भटी ने आभार प्रकट किया।

● अमरापुरा धाम (राज.)- संत लिखीदास महाराज स्मारक विकास संस्थान के अध्यक्ष राजेन्द्र गेहलोत, बलदेव सैनी, कृपाराम सोलंकी, राधकिशन तंवर मोतीबाबा फुले ने समाज के जरूरत मंदों की सहायता करने एवं प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान करने का आह्वान किया।

● बीकानेर (राज.)- माली सैनी समाज क्रिकेट मंडल द्वारा 1 नवम्बर से टी -20 क्रिकेट प्रतियोगिता होगी।

● सागर (मप्र.)- ऑल इंडिया माली सैनी सभा की मिटिंग अंजू सैनी की अध्यक्षता में हुई जिसमें बच्चों को शिक्षित करने का निश्चय किया।

● जयपुर(राज.)- जिला माली सैनी समाज संस्था के चुनाव में नगर निगम के पूर्व चेयरमैन रोशन सैनी सर्वानुमति से अध्यक्ष चुने गये। बधाई।

● सारंगपुर (मप्र.)- संयुक्त माली सैनी समाज राष्ट्रीय फुले ब्रिगेड की मिटिंग समाज को जागरूक एकजुट एवं शिक्षित करने का आह्वान किया।

● अजमेर (राज.)- सावित्रीबाई फुले संस्थान की संयोजक शारदा मालाकार ने समाज के आपसी विवाद समाज में ही निपटाने बच्चों को शिक्षित करने हेतु आह्वान किया।

● ब्यवरा(मप्र.)- फूल माली सोशल ग्रुप की मिटिंग नरेन्द्र पुष्पद की अध्यक्षता में यह निर्णय लिया कि प्रदेश स्तरीय युवक युवति परीचय सम्मेलन करने का निश्चय किया।

● बैर (राज.)- मां सावित्री बाई फुले विवाह सम्मेलन समिति ने 8 नवम्बर को चौथा सामूहिक विवाह सम्मेलन करने का निश्चय किया।

● केकड़ी(राज.)- क्षत्रिय फूल मालीयन नवयुवक मण्डल के हेमराज कच्छावा बनने पर बधाई।

● जोधपुर (राज.)- मनोहर सिंह सांखला वेट लिटर ने चौथी बार अन्तराष्ट्रीय स्तर वर्ल्ड पुलिस एण्ड फायर गोम्स में दो पदक जीते। बधाई।

● रोहतक (हरि.)- 18 सितम्बर को समाज के अधिकारी, कर्मचारी, डाक्टर, इन्जिनियर, वकील, उद्योगपतियों का परिचय सम्मेलन के मुख्य अतिथि नायबसिंह सैनी, सांसद विशिष्ट अतिथि डॉ. पवन सैनी विधायक प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित करेंगे। उक्त जानकारी जगदीश राय सैनी चेयरमैन ने दी।

● जोधपुर (राज.)- स्व. जगदीश सिंह परिहार की 85वीं जयंति पर श्रद्धांजली एवं रक्तदान शिविर का 24 अगस्त को आयोजन।

● मथुरा (उप्र.)- 13 सितम्बर को जिला सैनी सभा द्वारा वार्षिक उत्सव में महाराजा सैनी जयंति समारोह का आयोजन महाराज सैनी पब्लिक जुनियर हाई. स्कूल चामुण्डा कालोनी में आयोजित। उक्त जानकारी कप्तानसिंह सैनी प्रधानचार्य एवं संस्थापक ने दी।

● दिल्ली- 18 अगस्त को ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज के चुनाव अधिकारी इन्जिनियर दिनेश सैनी एवं ताराचन्द सैनी ने नव निर्वाचित राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों को शपथ पत्र-प्रदान किये। कार्यकारिणी समिति ने आगामी 3वर्ष के लिये दिलबाग सिंह सैनी को सर्वानुमति से अध्यक्ष बनाया। बधाई।

● नागपुर (महा.)- 20 अक्टोबर को अखिल भारतीय माली महासंघ द्वारा 6वाँ परिचय सम्मेलन एवं शुभमंगल परिचय स्मारिका का प्रकाशन होगा। सम्पर्क मोन्दू खड़के 9527988905 प्रतीक्षा पोहनकर 8806719680।

● फलटण (महा.)- 29 दिसम्बर को महाराष्ट्र माली समाज महासंघ एवं पाक्षिक महामित्र परिवार की और से समाज का वर-वधु परीचय सम्मेलन। सम्पर्क दशरथ सदाशिव फुले 9823272523।

● अरण (महा.)- 15 सितम्बर को माली समाज सत्ता संपादन राज्यव्यापि महामेलावा। सम्पर्क शंकरराव लिंगे 7387377801।

● साकोली (महा.)- 25 अगस्त को आ. भा. मालीसंघ द्वारा समाज का सम्मेलन उक्त जानकारी डॉ. श्रीकान्त भुसारी अध्यक्ष द्वारा दी।

● इलाहबाद (उप्र.)- अखिल भारतीय श्रीमाली महासभा के चुनाव में चन्दनलाल श्रीमाली, रजनी श्रीमाली उपाध्यक्ष चुने गये। बधाई।



संकलन

रामलाल कच्छावा
कोषाध्यक्ष

हम एक ऐसे समाज में रहते हैं, जहां सुन्दरता को रंग से देखा जाता है, शिक्षा को मार्क्स से देखा जाता है और सम्मान पैसा देखकर दिया जाता है।

(अब्दुल कलाम)



अगर मैं भी तुम्हारी तरह पढाई लिखाई छोड़कर, पूजा पाठ में लग जाता, तो आप सब आज भी मंदिरों के बहार अछूत बनकर भीख मांग रहे होते।

(डॉ भीमराव अम्बेडकर)



मेरा पक्का विश्वास है कि संसार कि कोई भी किताब किसी ईश्वर या किसी देवता न नहीं लिखी।

(महात्मा जोतीराव फुले)

